B.Ed. 2nd Year
Session – 2018-2020
Subject – Pedagogy of History
Course – 7 (A)/Unit – 2(d)
Topic – पाठ्यचर्या या पाठ्यक्रम (Curriculum)
Lecture No. - 69

Dr. Amod Kumar Sinha
(Assistant Professor)
Department of Education
A.N. D. College
Shahpur Patory
Samastipur

Continued from the previous lecture.....

पाठ्यक्रम के उद्देश्य
(Objectives of Curriculum)

शिक्षा एक त्रिमुखी प्रक्रिया है। इसके तीन महत्वपूर्ण अंग हैं - शिक्षक, शिक्षार्थी एवं पाठ्यक्रम। तीनों ही अंगों की पारस्परिक क्रिया में शिक्षा निहित है। किन्तु इसमें शिक्षा का विशेष स्थान है। इसकी अनुपस्थिति में न तो कोई शिक्षक उचित रूप से शिक्षा दे सकता है और न ही कोई शिक्षार्थी शिक्षा ग्रहण कर सकता है। एक अच्छी पाठ्यचर्या के निम्नलिखित उद्देश्य होने चाहिए -

1. **सर्वांगीण विकास** - पाठ्यक्रम के बालकों के सर्वांगीण विकास हेतु प्रेरणा प्रदान करनी चाहिये।

2. **संस्कृति व सभ्यता का हस्तांतरण** - इसे मानव जाति के अनुभवों को सम्मिलित रूप से स्पष्ट करके संस्कृति तथा सभ्यता का हस्तांतरण एवं विकास करना चाहिए।

3. **नैतिक गुणों का विकास** - पाठ्यक्रम को छात्रों में मित्रता , निष्ठा, निष्कपटता, सहयोग, सहनशीलता, सहानुभूति एवं अनुशासन आदि गुणों को विकसित करके नैतिक चरित्र का विकास करना चाहिये।

4. **नवीन मूल्यों का निर्माण** - इसे सामाजिक एवं प्राकृतिक विज्ञान, कला एवं धर्म के आवश्यक ज्ञान के द्वारा ऐसे गतिशील एवं लचीले मस्तिष्क का निर्माण करना चाहिये जो अपने जीवन की प्रत्येक परिस्थिति में साधनपूर्ण तथा साहसपूर्ण रहते हुए नवीन मूल्यों का निर्माण करे।

5. **मानसिक शक्तियों का विकास** - इसे छात्रों की चिन्तन , मनन, तर्क, तथा विवेक आदि समस्त मानसिक शक्तियों का विकास करना चाहिये।

6. **रचनात्मक शक्तियों का विकास** - इसे विभिन्न आयुवर्ग के बालकों की आवश्यकताओं, मनोवृत्तियों, क्षमताओं एवं योग्यताओं का ध्यान रखते हुए उनमे नाना प्रकार की सृजनात्मक एवं रचनात्मक शक्तियों का विकास करना चाहिये।

7. **ज्ञान की सामाओं का विस्तार** - पाठ्यचर्या को ऐसे विद्वान व्यक्तियों का निर्माण करना चाहिये जो लगातार शोधपूर्वक ज्ञान की सीमाओं का विस्तार कर सकें।

8. **जनतांत्रिक गुणों का विकास** - इसे छात्रों में जनतांत्रिक भावना का विकास करना चाहिये।

पाठ्यचर्या के आधार
(Bases of Curriculum)

पाठ्यक्रम का निर्माण शिक्षा के उद्देश्यों के अनुसार किया जाता है। शिक्षा का उद्देश्य जीवन के उद्देशयों पर आधारित होता है और जीवन का उद्देश्य अपने समय के दर्शन पर आधारित होता है। आधुनिक युग मे पाठ्यचर्या के निर्माण मे दर्शन के अतिरिक्त मनोवैज्ञानिक, वैज्ञानिक एवं सामाजिक प्रवृत्तियों का भी प्रभाव दिखायी पड़ता है। इस प्रकार पाठ्यक्रम निर्माण के चार प्रमुख आधार है -

1. **दार्शनिक आधार** (Philosophical Base) - जैसा कि पहले कहा जा चुका है कि शिक्षा के उद्देश्य हमे दर्शन से प्राप्त होते हैं। इस प्रकार पाठ्यक्रम की निर्माण की समस्या एक दार्शनिक समस्या है। विभिन्न दार्शनिक विचारधाराओं के अनुसार पाठ्यक्रम निर्माण के निम्नलखित आधार निर्धारित किये गए हैं -

   (a) आदर्शवाद
   (b) प्रकृतिवाद
   (c) प्रयोगवाद या प्रयोजनवाद
   (d) यथार्थवाद

To be continued.....